M.L.S. College Sorisab-Pahi, Madhubani
(L.N.M.U., Darbhanga)
Department of Philosophy
Dr. SARITA KUSHWAHA

B.A. Ist (Hon.)
Paper-IInd
Paper N.-Modern western Philosophy
Chap.-Spinoza (3)

Spinoza (स्पिनोजा) (3)

पर्याय का स्वरूप (Nature of Modes)

किसी द्रव्य के अनिवार्य धर्मों को गुण कहते हैं किन्तु उसके आगन्तुक अथवा आकस्मिक धर्मों को पर्याय या विकार कहते हैं। स्पिनोज़ा पर्याय की परिभाषा देते हुए कहते हैं कि "पर्याय से मेरा तात्पर्य द्रव्य की विक्रियाओं से अथवा पर्याय वह है जो दूसरी वस्तु में रहता है और उसके ही द्वारा समझा भी जाता है।"

पर्याय की सत्ता द्रव्य पर निर्भर है। पर्याय द्रव्य के आगंतुक लक्षण है। वे गुणों के माध्यम से अभिव्यक्त होते हैं। अब यहाँ प्रश्न उठता है कि पर्यायों को द्रव्य पर आश्रित क्यों माना जाता है? यदि पर्यायों को एक-दूसरे पर आश्रित माना जाय तो उनकी परस्पर निर्भरता 'इतरेताश्रय दोष' (Fallacy of Interdependence)' की ओर ले जाती है। इसके अलावा यदि एक पर्याय को दूसरे पर, दूसरा तीसरे पर आश्रित माना जाय तो अनवस्था दोष उत्पन्न हो जाता है। इन दोषों से बचने के लिए पर्यायों को द्रव्य पर आश्रित माना जाता है। पर्याय अपने अस्तित्व और ज्ञान दोनों के लिए द्रव्य पर आश्रित होते हैं। यही उनकी आपातिकता (Contingency) है।

स्पिनोज़ा के अनुसार पर्याय दो प्रकार के है:- प्रथम अनन्त और द्वितीय सान्त। ईश्वर के शरीर के रूप में पर्याय अनन्त और नित्य है पर व्यक्ती रूप में पर्याय सान्त और अनित्य है। चैतन्य के रूप में बुद्धि (Understanding)

Scanned with CamScanner

और संकल्प (will) अनन्त और नित्य पर्याय है। किन्तु जीवात्माओं के रूप में सान्त और अनित्य पर्याय है। इसी प्रकार विस्तार के रूप में गति (Motion) और स्थिति (Rest) अनन्त और नित्य पर्याय है तथा विभिन्न जड़-पदार्थों के रूप में सान्त और अनित्य है।

यदि पर्याय की तुलना द्रव्य से करें तो देखते हैं कि द्रव्य का अस्तित्व अनिवार्य है किन्तु पर्याय का अस्तित्व केवल सम्भाव्य है। द्रव्य का ज्ञान और द्रव्य का अस्तित्व दोनों अभिन्न हैं अर्थात् द्रव्य का सत्व (Essence) और उसका अस्तित्व (Existence) दोनों अभिन्न हैं किन्तु पर्याय के सत्व (Essence) और उसके अस्तित्व (Existence) में अभिन्नता नहीं पाई जाती है। यही उनकी आपातिकता (contingency) है पर यह अराजकता नहीं है। संसार में जो भी घटनाएँ घटित होती हैं वे पूर्ण रूप में निर्धारित स्वयं नियत होती हैं। संसार के सभी सीमित पर्याय कारण-कार्य की अटूट शृंखला में इस प्रकार आबद्ध होते हैं कि उनमें आकस्मिकता, विकल्प और प्रयोजन के लिए कोई स्थान नहीं रह जाता। कोई भी घटना जिस प्रकार है, या घटित हो रही है, उससे अन्यथा घटित नहीं हो सकती। प्रकृति में पूर्ण नियतत्ववाद (Determinism) है। भौतिक तथा आध्यात्मिक दोनों ही जगत में पूर्ण नियतत्ववाद लागू होता है।

यद्यपि पर्याय अपने अस्तित्व के लिए द्रव्य पर पूर्णतया आश्रित है, पर इसका यह अर्थ नहीं है कि पर्यायों के बिना द्रव्य की कल्पना की जा सकती है। वह (द्रव्य) नित्य, क्रियाशील गतिशील और परिणमनशील है। परिणमनशीलता द्रव्य का स्वाभाविक लक्षण है। जिस प्रकार त्रिभुज की परिभाषा से त्रिभुज के अनेक गुण स्वाभाविक रूप से निगमित होते हैं उसी प्रकार द्रव्य की परिणमनशीलता से उसके अनेक पर्याय व्युत्पन्न होते हैं।

आलोचना :- (1) कुछ विचारक यह प्रश्न उठाते हैं कि नित्य द्रव्य से पर्यायों की उत्पत्ति कैसे संभव है। हेगेल का प्रसिद्ध कथन है कि "स्पिनोजा का ईश्वर उस सिंह की खोह है, जिसकी ओर सभी पद चिन्ह जाते हुए तो दिखायी देते हैं किन्तु

Scanned with CamScanner

लौटते हुए पद चिन्ह दिखायी नहीं देते। हेगेल यह कहना चाहते थे कि पर्यायों से द्रव्य का अस्तित्व तो सिद्ध होता है किन्तु द्रव्य से पर्यायों का अस्तित्व किसी भी प्रकार से सिद्ध नहीं किया जा सकता। द्रव्य से पर्यायों की उत्पत्ति कैसे होती है स्पिनोजा इसे स्पष्ट नहीं करते हैं।

② दूसरी समस्या यह उठती है कि द्रव्य और पर्याय में किस प्रकार का सम्बंध है? द्रव्य एवं पर्याय के मध्य कारण-कार्य सम्बंध तो नहीं हो सकता क्योंकि कारण कार्य सम्बंध के लिए दो अलग-अलग इकाईयों की आवश्यकता होगी लेकिन स्पिनोज़ा केवल एक ही इकाई द्रव्य या ईश्वर को स्वीकार करते हैं।

③ स्पिनोजा के अनुसार सूक्ष्म रूप में प्रत्येक पर्याय द्रव्य है तथा पर्याय अनेक हैं। तो यहाँ हम यह कह सकते हैं कि द्रव्य अनेक हैं जॉन केयर्ड के अनुसार 'अन्ततः स्पिनोजावाद बहुलवाद में परिवर्तित हो जाता है।' स्पिनोजा के द्रव्य का प्रारम्भ अद्वैतवाद से होता है। लेकिन उसका अंत पर्यायों के बहुलवाद में होता है जो किसी न किसी रूप में द्रव्य की बहुलता तो सिद्ध करता है।

उपर्युक्त आलोचनाओं से यह निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता कि स्पिनोज़ा का पर्याय सिद्धान्त उसके द्रव्य सिद्धान्त से असंगत है। वे पर्यायों को द्रव्य अवश्य कहते हैं किन्तु उस दृष्टि से पर्याय द्रव्य नहीं है जिस दृष्टि से ईश्वर द्रव्य है। ईश्वर के द्रव्यतत्व एवं पर्यायों के द्रव्यत्व में अंतर है। स्पिनोज़ा दो दृष्टियों का उल्लेख करते हैं। प्रथम-व्यवहारिक दृष्टि (Sub specie Temporis), दूसरा- पारमार्थिक दृष्टि (Sub Specie Aeternitatis)। व्यवहारिक दृष्टि से सभी पर्याय द्रव्य रूपी दिखायी देते हैं लेकिन पारमार्थिक दृष्टि से देखने पर केवल एक ही द्रव्य दिखायी देता है। वस्तुतः जीवात्मायें एवं भौतिक वस्तुयें द्रव्य न होकर केवल द्रव्य के पर्याय हैं। द्रव्य एवं पर्यायों के मध्य उत्पन्न समस्या उपर्युक्त दोनों दृष्टियों को नहीं समझने से उत्पन्न होती है।

Savita Kushwaha
04/05/2020

Scanned with CamScanner